वार्ड सभा की चर्चा ने मंजु को किया सक्रिय

वार्ड सभा सशक्तीकरण दल के सदस्य एक बार फिर रोशन के घर पहुंचे. उस वक्त वह खेलने गया था. मंजु देवी गोयठा ठोंक रही थी. उसने बताया कि उसका बेटा अब किताब पढ़ने लगा है. शाम के वक्त कभी-कभार किताब लेकर बैठता है. वह उसे रोज स्कूल भेजती है और उसका ट्यूटर भी बदल दिया गया है. दल के सदस्य शाम छह बजे फिर उसके घर आये. रोशन घर लौट चुका था. सदस्यों ने उसके पढ़ने के स्तर की जांच की. वह वास्तव में किताब की कहानियां पढ़ने लगा था.

महज कहानी नहीं कहानी का प्लॉट है यह

यह महज एक गांव की या एक घटना पर आधारित कहानी नहीं, बल्कि कहानी का प्लॉट है. ऐसी कहानी (उपलब्धि) राज्य और देश की दूसरी पंचायतें, वार्ड सभा, समाज, अभिभावक और स्कूलों के शिक्षक लिख सकते हैं यानी अपने क्षेत्र, समाज, परिवार और स्कूल के बच्चों की शिक्षा के स्तर में बदलाव से लेकर ग्रामीण विकास के क्षेत्र में बड़ी पहल कर सकते हैं. इस घटनाक्रम के उत्साह बढ़ाने वाले और निराश करने वाले दोनों पक्ष हैं. जो उत्साहजनक पक्ष हैं, हमें उसे स्वीकार करना चाहिए और जो निराशाजनक हैं, उनमें सुधार की पहल करनी चाहिए.

उत्साहजनक पक्ष

मंजु देवी : वह अभिवंचित समाज की हैं. अशिक्षित हैं. आर्थिक रूप से कमजोर हैं. गोयठा ठोंकने से लेकर दूसरे घरेलू काम-काज तक सिमटी हैं, लेकिन बेटे की शिक्षा को लेकर सजग हैं. वार्ड सभा की बैठकों में हस्तक्षेप की उनमें ताकत है. बड़ी-बड़ी बातों की जगह जमीनी स्तर पर, अपने घर की समस्या को वार्ड सभा का एजेंडा बना सकती हैं. वार्ड सभा की सलाह पर अमल कर सकती हैं और इसकी बदौलत नतीजा अपने पक्ष में पैदा कर सकती हैं.

वार्ड सभा : वार्ड सभा में केवल चर्चा से कोई नतीजा नहीं निकल सकता, इस सत्य को स्वीकारा. एजेंडा पर बहस से आगे निकल कर काम किया. हर संभव पहलू की जांच की, उसके हिसाब से योजना बनायी और उस पर अमल किया.

मंजु देवी ने वार्ड सभा की दिशा बदली

चर्चा से निकली बच्चों के शिक्षा सुधार की राह

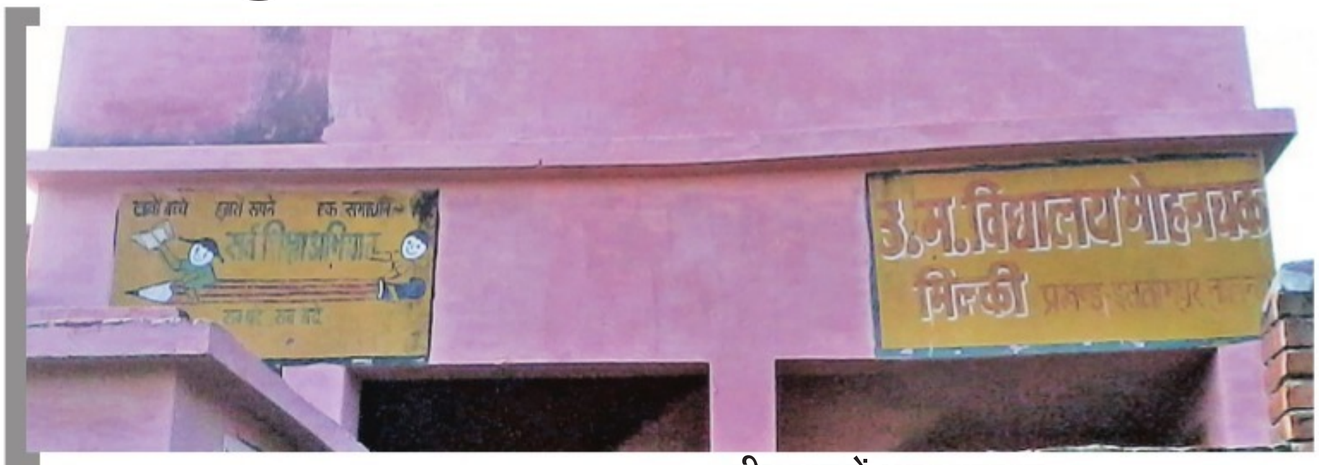

पंचायतनामा डेस्क

मंजु देवी अभिवंचित समुदाय से आती हैं. एक मामूली घरेलू महिला हैं. जाहिर तौर पर खुद शिक्षा हासिल करने से वंचित रहीं, लेकिन शिक्षा को लेकर वार्ड सभा को ऐसी दिशा दी कि वह नजीर बन गया. वह नालंदा जिले के इस्लामपुर प्रखंड की मोहनचक पंचायत की रहने वाली हैं. पंचायत की वार्ड सभा की बैठक हुई. बैठक में 13 पुरूष और नौ महिलाएं शामिल हुए. हालांकि इसमें पुरुषों की संख्या ज्यादा थी और सभा की अध्यक्षता राजेश कुमार ने की. बैठक का अपना एजेंडा पहले से तय था, लेकिन मंजु देवी ने बैठक में अपने बेटे की शिक्षा के स्तर को एजेंडा के रूप में जुड़वाया और पूरी सभा की दिशा बदल दी. उसने बताया कि उसका बच्चा कहने को तो छठी कक्षा का छात्र है, लेकिन उसे आता कुछ भी नहीं है. उसे सौ रुपया मासिक फी देकर ट्यूशन पढ़वा रही है. फिर भी वह कुछ नहीं सीख पा रहा. सभा में यह बहस का मुद्दा बन गया. इस पर खुली चर्चा शुरू हो गयी. इस मुद्दे को बच्चा और उसके बच्चे मां-बाप के नाम के साथ एजेंडा में शामिल कर लिया गया.

छठी का बच्चा अक्षर भी नहीं पहचान पाया

पहले तो चर्चा में ज्यादातर लोग विद्यालय को दोष दे रहे थे, पर यह भी कह रहे थे कि बच्चा ट्यूशन भी पढ़ रहा है. फिर बच्चे को क्यों नहीं कुछ आता है. बच्चे को सभा में बुलाने का फैसला हुआ, ताकि देखा जा सके कि तथ्य कितना सही है. मंजु देवी ने 10 मिनट का समय लिया और अपने बेटे रौशन कुमार के साथ सभा में दोबारा उपस्थित हुई. लोगों ने शांति से मामले को परखना शुरू किया. अध्यक्ष ने रौशन को पास बुलाया. उसे दूसरी कक्षा की किताब पढ़ने को दी गयी. लोग यह देख दंग रह गये कि बच्चा ठीक से अक्षर भी नहीं पहचान पाता है.

घर-घर जाकर बच्चों की हुई जांच

चर्चा के बाद वार्ड सभा ने निर्णय लिया कि वार्ड सदस्य विद्यालय जाकर इसकी शिकायत करेंगे और महिला को सुझाव दिया गया कि बच्चे को अब दूसरी जगह ट्यूशन पढ़ने भेजे. एक व्यक्ति अशोक कुमार को दो अन्य लोगों के साथ घर-घर जाकर दूसरी कक्षा के असर टूल्स के आधार पर सभी बच्चों के शिक्षा के स्तर का पता लगाएं. उनसे इसकी रिपोर्ट वार्ड सदस्य को उपलब्ध कराने का भार दिया गया, ताकि वे सभी तथ्यों को विद्यालय के समक्ष रख सकें.

तीन माह में आया बदलाव

जनवरी के अंतिम सप्ताह में वार्ड सभा सशक्तीकरण दल के पास एक रिर्पोट आयी. रिपोर्ट से पता चला कि मंजु देवी का बेटा अब कहानी थोड़ा रुक कर पढ़ पा रहा है. रिपोर्ट पर प्रेरणा दल को विश्वास नहीं हो रहा था कि 2-3 महीने में बच्चे में इतना विकास कैसे हुआ. इस तथ्य से खुद वाकिफ होने के लिए वार्ड सभा सशक्तिकरण दल के सदस्य बच्चे के घर पहुंचे. वार्ड सदस्य राजेश कुमार भी उनके साथ थे. वहां वार्ड सभा के निर्णय और बच्चे में आये बदलाव पर चर्चा हुई. अंतिम रूप से यह तथ्य उजागर हुआ कि बच्चे के शिक्षा के स्तर में सुधार आया है. यह सुधार स्कूल के शिक्षकों द्वारा उस पर विशेष ध्यान देने से संभव हुआ. दरअसल स्कूल को भी इस बात की सूचना दी गयी थी कि कैसे मंजु देवी का छठी कक्षा में पढ़ने वाला बच्चा रोशन वार्ड सभा का इसलिए एजेंडा बना है कि वह पढ़ाई में बिल्कुल ही कमजोर है.

एक मामले ने तय करायी सभी बच्चों की नियमित उपस्थिति

अब बारी स्कूल की थी. सभी ने मध्य विद्यालय मोहनचक का दौरा किया. वहां तीन शिक्षिका और एक शिक्षक बैठे मिले. दल के सदस्य ने रोशन के बारे में पूछा. रोशन के क्लास टीचर मोहम्मद असलम सामने आये. दल ने यह जानने की कोशिश की कि 2-3 महीने में रौशन कुमार में इतना बदलाव कैसे संभव हुआ. मोहम्मद असलम ने बताया कि यह बच्चे के नियमित स्कूल आने से संभव हुआ. आमतौर पर बच्चे स्कूल में तभी आते हैं, जब उनके बीच कुछ बंटने वाला होता है. चाहे स्कूल ड्रेस हो या छात्रवृत्ति का पैसा. अभिभावक भी बच्चे को तभी स्कूल भेजने में रुचि लेते हैं. आम दिनों में अभिभावक भी इसे लेकर लापरवाह होते हैं. स्कूल में रोशन प्रकरण के बाद बच्चों की नियमित उपस्थिति की दर बढ़ी है. शिक्षकों ने साफ साफ हिदायत दे दी है, जो नियमित स्कूल नहीं आयेगा, उसे ड्रेस नहीं मिलेगा.

ऐसी बनी राह

इस एक घटनाक्रम ने गांव में बच्चों की उपस्थिति दर में बढ़ोतरी की. अभिभावक बच्चों की शिक्षा के स्तर और उन्हें नियमित रूप से स्कूल भेजने को लेकर जागरूक हुए. शिक्षकों ने अपनी जिम्मेवारी समझी और वार्ड सभा सक्रिय हुआ. इसके तीन घटक हैं. वार्ड सभा या समाज, परिवार एवं माता-पिता तथा स्कूल.

महिलाओं के लिए राष्ट्रीय क्रेडिट फंड या राष्ट्रीय महिला कोष की स्थापना मार्च 1993 में भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के तहत महिला तथा बाल विकास विभाग द्वारा एक स्वतंत्र पंजीकृत सोसाइटी के रूप में की गई थी.